**यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।**
**तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।**

'श्रीभगवान् और गुरुदेव में परम श्रद्धा वाले महात्माओं के हृदय में वैदिक ज्ञान का सम्पूर्ण तात्पर्य अपने-आप प्रकाशित हो जाता है।'

**भक्तिरस्य भजनं तदिहामुत्रोपाधि नैरास्येनामुष्मिन् मनः कल्पनमेतदेव नैष्कर्म्यम्** : 'भक्ति का अर्थ लौकिक अथवा पारलौकिक—सब विषय-कामनाओं से रहित भगवत्सेवा करना है। विषयैषणा से मुक्त होकर मन को पूर्णरूप से श्रीकृष्ण में तन्मय कर देना ही 'नैष्कर्म्य' का प्रयोजन है।'

ये कुछ वे साधन हैं, जिनसे योग की परम संसिद्धि—भक्तियोग अथवा कृष्णभावना का आचरण हो सकता है।

**ॐतत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे**
**श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ध्यानयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः।।६।।**
**इति भक्तिवेदान्त भाष्ये षष्ठोऽध्यायः।।**